प्रकाशन तिथि : 01 सितम्बर, 2021
प्रेषण तिथि : 04 सितम्बर, 2021

'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2021-23
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 25 | अंक 12 | कुल पृष्ठ: 8 | एक प्रति: रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

नौ दिवसीय कार्यक्रमों के तहत सैंकड़ों जगह मनाई राष्ट्रनायक दुगार्दास की जयंती

'पूज्य तनसिंह जी आधुनिक युग के दुगार्दास'

आलोक आश्रम, बाड़मेर

संघ शक्ति, जयपुर

धानपुर, जालोर

पूज्य तनसिंह जी आधुनिक काल के दुगार्दास हैं। जिस प्रकार की परिस्थितियां दुगार्दास जी के सामने थी, उसी प्रकार की परिस्थितियां तनसिंह जी के सामने भी थी। जिस प्रकार से दुगार्दास जी ने अपने ध्येय के लिए अपना सर्वस्व समर्पित किया उसी प्रकार तन सिंह जी भी किसी भी परिस्थिति से समझौता किए बिना अपने ध्येय पर अडिग रहे और हमें श्री क्षत्रिय युवक संघ जैसा अनूठा मार्ग दिया। जब तक हम भी दुगार्दास जी और तनसिंह जी जैसे अपने पूर्वजों के मार्ग पर चलकर क्षात्रधर्म का पालन नहीं करते तब तक हम राजपूत तो हैं लेकिन क्षत्रिय नहीं हैं। हमारे रजोगुण को सत्वोन्मुख बनाए बिना हम क्षत्रिय बन नहीं सकते और इसके लिए अपने अंतर को बदलना पड़ेगा। निरंतर अभ्यास से ही यह संभव है। संघ उसी अभ्यास का मार्ग है। राष्ट्रनायक दुगार्दास जी की जयंती के उपलक्ष में श्री क्षत्रिय युवक संघ परिवार द्वारा आयोजित नौ दिवसीय स्मृति कार्यक्रमों की पूणार्हुति के अवसर पर संघ के सरंक्षक माननीय श्री भगवानसिंह रोलसाहबसर ने श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन के तत्वावधान में आलोक आश्रम, बाड़मेर में 21 अगस्त के कार्यक्रम को संबोधित करते हुए उपरोक्त बात कही। कार्यक्रम को रावत त्रिभुवन सिंह, बाड़मेर विधायक मेवाराम जैन, पूर्व सांसद मानवेंद्र सिंह जसोल, पूर्व मंत्री गफूर अहमद, नगर परिषद सभापति दीपक परमार, सेवानिवृत्त पुलिस महानिरीक्षक महेंद्र चौधरी, पूर्व विधायक तरुण राय कागा, आजादसिंह शिवकर, आर एस एस के विभाग प्रचारक विजेंद्र कुमार, राम सिंह बोथिया आदि ने भी संबोधित किया। केंद्रीय कार्यकारी रेवन्त सिंह पाटोदा ने प्रारंभ में राष्ट्रनायक का परिचय प्रस्तुत किया वहीं केंद्रीय कार्यकारी कृष्ण सिंह रानीगांव व श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन के महेंद्र सिंह तारातरा ने कार्यक्रम का संचालन किया। 21 अगस्त को जयपुर स्थित केंद्रीय कार्यालय संघशक्ति में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए वरिष्ठ स्वयंसेवक एवं श्री प्रताप फाउंडेशन के संयोजक माननीय महावीर सिंह जी सरवड़ी ने कहा कि दुगार्दास जी का जीवन एक आदर्श क्षत्रिय का जीवन है। गीता में भगवान कृष्ण ने क्षत्रिय के जो सात गुण बताए हैं वे सभी गुण दुगार्दास जी में थे। ऐसे महापुरुषों के त्यागमय जीवन से ही संस्कृति और धर्म का रक्षण हो पाया है। दुगार्दास जी से प्रेरणा लेकर हम भी शौर्य, तेज, धैर्य, दक्षता, संघर्षप्रियता, त्याग और ईश्वरीय भाव जैसे गुणों को अपने भीतर उतार कर सच्चे क्षत्रिय बनें, यही उनकी जयंती पर हमारी ओर से सच्ची श्रद्धांजलि होगी। कार्यक्रम को जयपुर शहर से सांसद रामचरण बोहरा, संघ के केंद्रीय कार्यकारी गजेंद्र सिंह आऊ, आरएसएस प्रचारक धनंजय, श्री क्षात्र पुरूषार्थ फाउंडेशन के यशवर्धन सिंह झेरली ने भी संबोधित किया। प्रेम सिंह बनवासा ने कार्यक्रम का संचालन किया। बीकानेर संभाग के अंतर्गत श्री डूंगरगढ़ स्थित रघुकुल राजपूत छात्रावास में भी 21 अगस्त को दुगार्दास जयंती समारोह माननीय संघप्रमुख श्री लक्ष्मण सिंह बैण्यांकाबास के सान्निध्य में संपन्न हुआ। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए संघ प्रमुख श्री ने कहा कि दुगार्दास जी हम सबके आदर्श हैं। उनकी ध्येयनिष्ठा और वीरता अतुलनीय है। उनके जीवन की हर घटना हमारे लिए क्षत्रियत्व की परिभाषा है। संघ द्वारा दुगार्दास जी की जयंती मनाने का उद्देश्य यही है कि दुगार्दास जी की भांति हमारे भीतर भी क्षत्रियत्व के गुण उतर आएं। संघ अपने शिविरों व शाखाओं के माध्यम से भी यही कार्य कर रहा है। रूपचंद सोनी (गुरुजी) तथा वरिष्ठ स्वयंसेवक भरत सिंह सेरूणा ने भी कार्यक्रम को संबोधित किया। कार्यक्रम में स्वयंसेवकों व सहयोगियों सहित सैकड़ो समाजबंधु सम्मिलित हुए। इसी दिन बीकानेर स्थित संभागीय कार्यालय नारायण निकेतन में भी माननीय संघप्रमुख श्री के सानिध्य में जयंती कार्यक्रम का आयोजन हुआ। राष्ट्रनायक वीर दुगार्दास राठौड़ की स्मृति में नौ दिवसीय जयंती कार्यक्रमों की यह श्रृंखला उनकी आंग्ल पंचांग अनुसार जन्मतिथि 13 अगस्त से भारतीय पंचांग अनुसार जन्मतिथि श्रावण शुक्ला चतुर्दशी (21 अगस्त) तक चली। इस दौरान विभिन्न स्थानों पर पूरे नौ दिन तक जयन्ती कार्यक्रमों के माध्यम से समाज ने राष्ट्रनायक के प्रति अपनी श्रद्धा व कृतज्ञता ज्ञापित की। इस श्रृंखला का आरंभ 13 अगस्त को प्रातः संघप्रमुख श्री के वर्चुअल उद्बोधन से हुआ। 20 अगस्त तक प्रतिदिन माननीय महावीर सिंह जी के वर्चुअल उद्बोधन हुए जिनमें राष्ट्रनायक दुगार्दास जी के जीवन की गीता में वर्णित क्षत्रिय के गुणों के आधार पर विवेचना की गई। भौतिक कार्यक्रमों की शुरूआत 13 अगस्त को जालौर संभाग के धानपुर में सुभद्रा माताजी मंदिर के प्रांगण में माननीय संघप्रमुख श्री लक्ष्मण सिंह बैण्यांकाबास के सान्निध्य में आयोजित कार्यक्रम से हुआ। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि दुगार्दास जी वास्तविक अर्थों में राष्ट्रनायक हैं क्योंकि भारत के महान सनातन मूल्य उनके चरित्र के अभिन्न अंग है। एक आदर्श क्षत्रिय के रूप में उन्होंने जो जीवन जिया वह हम सभी को आज सैकडों वर्षों बाद भी प्रेरणा दे रहा है। हमने भी उसी वंश परंपरा में जन्म लिया है लेकिन हमारे भीतर क्षत्रियत्व कितना है, रजपूती कितनी है यह स्वयं हमारे आकलन करने की बात है। दुगार्दास जी की भांति जब हम भी क्षात्रधर्म का पालन करेंगे तभी स्वयं को क्षत्रिय कहने के अधिकारी बनेंगे। कार्यक्रम को आहोर विधायक छगन सिंह राजपुरोहित, कांग्रेस नेता लालसिंह धानपुर, चैनकरण सिंह करणोत, ईश्वर लाल शर्मा व सुमेर सिंह धानपुर ने भी संबोधित किया।

(शेष पृष्ठ 2 पर)

नौ दिवसीय कार्यक्रमों के तहत सैंकड़ों जगह मनाई राष्ट्रनायक दुगार्दास की जयंती

आकोड़ा, बाड़मेर

सूरत

नाहर मगरा, डूंगरपुर

हणुवंत हाउस, जोधपुर

देवीनगर (जयपुर)

(पेज एक से लगातार)

संभाग प्रमुख अर्जुन सिंह देलदरी स्वयंसेवकों व समाजबंधुओं सहित कार्यक्रम के दौरान उपस्थित रहे। जोधपुर संभाग में इसी दिन जय भवानी नगर (बासनी), देचू (शेरगढ़), राजपूत छात्रावास (फलोदी), केतु (शेरगढ़), बस्तवा (शेरगढ़), बामणू (फलोदी), बेदू (ओसियां), खेजडला, पालड़ी सिद्धा और खारिया खंगार में 13 अगस्त को जयन्ती मनाई गई। जयपुर संभाग के अंतर्गत बजरंग द्वार मंडल के रघुराज अकादमी के प्रांगण में, जालोर के रानीवाड़ा स्थित राजपूत छात्रावास में, पाली प्रांत के सुमेरपुर स्थित महाराजा हनुवंत सिंह उद्यान में, बाड़मेर संभाग के शिव प्रांत में भिंयाड़ गांव स्थित मातेश्वरी शाखा मैदान में, गुड़ामालानी प्रांत में पूज्य तनसिंह जी के पैतृक गांव रामदेरिया में, उंडखा तथा मिठड़ा गांव में, बायतु प्रांत के आकदड़ा गांव स्थित नागणेशी माता मंदिर के प्रांगण में, पाटोदी में, सिवाना स्थित श्री कल्ला रायमलोत राजपूत बोर्डिंग में भी जयंती मनाई गई। महाराष्ट्र संभाग के अंतर्गत दक्षिण मुंबई प्रांत की तणेराज शाखा, उत्तर मुंबई प्रांत की नारायण शाखा तथा मलाड की वीर दुगार्दास शाखा में, बनासकांठा प्रांत के धानेरा स्थित राजपूत हॉस्टल में कार्यक्रम हुआ। अजमेर के सरवाड़ में क्षत्रिय सभा संस्थान द्वारा दुगार्दास जी की जयंती मनाई गई। बीकानेर संभाग के प्रान्त चुरू में गांव दसूसर, बिरान और भूकरका में, श्री डुंगरगढ़ प्रान्त के पुन्दलसर में तथा छतरगढ़ प्रान्त के मोतिगढ़ में, सूरतगढ़ स्थित करणी माता मंदिर में जयंती कार्यक्रम आयोजित हुआ। मध्यप्रदेश के उज्जैन स्थित दुगार्दास जी के स्मारक पर उज्जैन राठौड़ क्षत्रिय समाज ट्रस्ट, उज्जैन राठौर नगर सभा, महिला संगठन, युवा संगठन, मध्यप्रदेश प्रांतीय राठौर क्षत्रिय सभा के कार्यकताओं ने पुष्पांजलि अर्पित की। बालोतरा के आवासन मंडल में, जागसा व मेवानगर में भी कार्यक्रम आयोजित हुआ। गाँधीनगर (गुजरात) के सेंट्रल विस्टा गार्डन में वरिष्ठ स्वयंसेवक महावीर सिंह हरदासकाबास की उपस्थिति में 13 अगस्त को ही जयन्ती मनाई गई। अगले दिन 14 अगस्त को जोधपुर शहर प्रान्त के हनवंत राजपूत छात्रावास में, शेरगढ़ प्रान्त के जिनजिनयाला कल्ला व चोरडिया में, जयपुर संभाग में मालवीय नगर स्थित चामुंडा माता मंदिर में, बनासकांठा प्रान्त के मजादर में पद्मनी शाखा काणेटी व जेठानिया में दुगार्दास जी की जयन्ती निमित्त कार्यक्रम हुए। 15 अगस्त को सूरत प्रान्त के गोडादरा मंडल की वीर दुगार्दास शाखा में, बाड़मेर संभाग के चौहटन प्रान्त के आकोड़ा गांव में, जोधपुर संभाग के फलोदी ओसियां प्रान्त के बड़ी सिड्ड और शेखासर में, पाली प्रान्त के खिन्दारा गाँव में श्री खेडादेवी मन्दिर में, जयपुर के कनकपुरा स्थित मरुधर डिफेंस अकादमी में कार्यक्रम हुआ। इसी दिन बनासकांठा प्रान्त के अंतर्गत जागीरदार कोटड़ी डागिया मड़ाणा में, जयपुर शहर प्रान्त के अंतर्गत देवी नगर सोडाला में, जयपुर ग्रामीण प्रान्त में सिरसी रोड स्थित 21 नंबर बस स्टैंड पांच्यावाला में, अलवर प्रान्त के दोसौद में, दौसा प्रान्त के झांपडावास में, जोधपुर शहर स्थित संभागीय कार्यालय तनायन में, शेरगढ़ प्रान्त के बेलवा स्थित गाजणा माता मंदिर में, बाड़मेर संभाग के गुड़ामालानी प्रांत में बेसलानियों का तला (बूठ) में, मेहसाणा जिले की विसनगर तहसील के राठौड़ीपुरा गांव थरोत्तर प्रांत के मुल्की भवन खेड़ा व कनीज में भी जयन्ती मनाई गई। 16 अगस्त को इसी श्रृंखला में जोधपुर शहर स्थित सरदार छात्रावास में, चिरड़िया (लूणी) में, फलोदी ओसियां प्रांत के भेड़ में, शेरगढ़ प्रांत में बेलवा राणाजी व आवड़ माता मंदिर में कार्यक्रम हुए। जयपुर में दादी का फाटक पर, जैसलमेर संभाग में धोबा व तेजमालता गांव में, मध्य गुजरात संभाग के चरोतर प्रान्त के घोरा गांव में कार्यक्रम हुआ। कर्नाटक में बैंगलोर प्रान्त द्वारा राष्ट्रनायक की जयंती श्री राजपूत भवन, रानासिंहपेट में वहीं बालोतरा प्रान्त के असाडा में जयन्ती मनाई गई। 17 अगस्त को नागौर संभाग के अंतर्गत खीमसर फोर्ट में, जयपुर ग्रामीण प्रांत (दक्षिण पश्चिम) के मांचवा में, जोधपुर शहर प्रांत की बीजेएस कॉलोनी में, शेरगढ़ प्रांत के सेतरावा, गोपालसर व रामगढ़ में, रावल गढ़ की पद्मावती बालिका शाखा में, पोकरण प्रांत में श्री दयाल राजपूत छात्रावास में, रामदेवरा के गणेश मंदिर स्थित सभागार में, जालौर संभाग के सांचौर प्रांत के राव बल्लू जी राजपूत छात्रावास में, जालोर प्रांत के वलदरा गांव में कार्यक्रम हुआ। इसी कड़ी में 18 अगस्त को जयपुर ग्रामीण प्रांत के दूदू स्थित राजपूत सभा भवन में, जोधपुर संभाग में जोधपुर शहर प्रान्त में विजयनगर (चौपासनी) में, शेरगढ़ प्रान्त के बस्तवा में, जालौर संभाग में बागोड़ा स्थित प्रताप पब्लिक स्कूल नया खेड़ा में, जैसलमेर संभाग के म्याजलार में, फलसुंड में, बाड़मेर संभाग के चोहटन प्रांत के रामसर स्थित डूंगरपुरी जी के मठ में कार्यक्रम हुआ। 19 अगस्त को जयपुर ग्रामीण प्रांत के झोटवाड़ा स्थित अनंता किड्स कॉर्नर स्कूल में, बांसवाड़ा की पडोली ग्राम पंचायत में कल्ला जी राठौड़ मंदिर में, जोधपुर शहर प्रान्त में ओम नगर नांदड़ी में, बालसमंद में, भोपालगढ़ प्रान्त के साथिन में, मध्य गुजरात संभाग के अंतर्गत अहमदाबाद प्रान्त में श्री हरेंद्र सिंह राजपूत समाज भवन, गोता (सरखेज गांधीनगर हाईवे) में श्री राजस्थान राजपूत युवा सेना के सहयोग से व जालौर संभाग के भीनमाल प्रांत के कावतरा गांव में कार्यक्रम आयोजित हुए। 20 अगस्त को जयपुर संभाग में झोटवाड़ा स्थित मुक्तेश्वर महादेव मंदिर सिंहभूमि में, जोधपुर स्थित दुगार्दास स्मारक पर, शेरगढ़ प्रान्त के जवाहर नगर केतु, गडा, बालेसर सत्ता, बालेसर दुर्गावता, खिरजा खास, तेना, नाहर सिंह नगर तथा भूंगरा में, ओसियां प्रान्त के निम्बो के तालाब में जयंती कार्यक्रम आयोजित हुआ। इसी प्रकार बाड़मेर संभाग के चोहटन प्रांत के देदूसर में, बालोतरा संभाग के कांखी में, मेवाड़ वागड़ संभाग में उदयपुर स्थित दवाणा हाउस (एकलिंगपुरा) में, डूंगरपुर के नाहरमंगरा में, राजसमंद स्थित हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी के सामुदायिक भवन में, मेवाड़ मालवा संभाग के भीलवाड़ा स्थित नागोरी गार्डन में कार्यक्रम हुए।

श्री डूंगरगढ़

(शेष पृष्ठ 7 पर)

शेखासर

मीठड़ा, बाड़मेर

भावनगर

दस दिन में दस प्रशिक्षण शिविर, सैंकड़ों शिविरार्थियों ने लिया प्रशिक्षण

गिरी सुमेल, पाली

थलसर, गुजरात

अलाय, नागौर

कोरोना काल के कारण श्री क्षत्रिय युवक संघ के प्रशिक्षण शिविरों में आया अवरोध अगस्त माह में दूर हुआ और पूर्व की भांति स्वाभाविक रूप से शिविर लगने प्रारंभ हुए। 14 से 23 अगस्त तक की दस दिन की अवधि में विभिन्न स्थानों पर दस प्रशिक्षण शिविर संपन्न हुए जिनमें समाज के सैंकड़ों युवाओं ने क्षत्रियोचित संस्कारों का प्रशिक्षण प्राप्त किया। जालौर संभाग के पाली प्रांत में बर के निकट गिरी-रणस्थली पर 19 से 22 अगस्त तक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन हुआ। संभाग प्रमुख अर्जुन सिंह देलदरी ने शिविर का संचालन करते हुए शिविरार्थियों को बताया कि हमारा यह शिविर स्थल जैता, कुम्पा, खींवकरण जी जैसे वीरों के बलिदान का पावन स्थान है। इसी भूमि पर अपनी मातृभूमि के स्वाभिमान की रक्षा के लिए इन वीरों ने अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया था। हम भी उन्हीं वीरों की संतान है और जिस परम्परा को उन्होंने अपने रक्त से सींचा है उस परंपरा का रक्षण व पोषण करना हमारा कर्तव्य है। इस कर्त्तव्य को निभाने का मार्ग संघ हमें उपलब्ध करा रहा है। शिविर में रायपुर, सोजत, पाली, सुमेरपुर, जालोर आदि क्षेत्रों से युवा सम्मिलित हुए। शिविर के दौरान 21 अगस्त को राष्ट्रनायक दुगार्दास राठौड़ की जयंती भी मनाई गई। इसी अवधि में बाड़मेर संभाग के शिव प्रांत के मुंगेरिया गांव में चार दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन हुआ। छगन सिंह लुणु ने शिविर का संचालन किया। उन्होंने शिविरार्थियों से श्री क्षत्रिय युवक संघ के शिक्षण को जीवन में उतारने का आह्वान करते हुए कहा कि जो ज्ञान हमारे व्यवहार में उतरता है वही वास्तविक ज्ञान है, शेष तो केवल बोझ है। संघ का मार्ग अभ्यास का मार्ग है। निरंतर अभ्यास से ही हम स्वयं को रूपांतरित कर सकते हैं और हमारे रूपांतरण से ही समाज भी रूपांतरित हो सकता है। शिविर में लगभग 100 युवाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। 21 अगस्त को दुगार्दास राठौड़ जयंती भी मनाई गई। शिविर में वरिष्ठ स्वयंसेवक चैन सिंह बैठवास, भवानी सिंह मुंगेरिया व संभाग प्रमुख महिपाल सिंह चूली भी सम्मिलित हुए। जैसलमेर संभाग में 19 से 22 अगस्त की अवधि में तीन प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन हुआ। सांकड़ा में आयोजित शिविर का संचालन करते हुए नरपत सिंह राजगढ़ ने उपस्थित युवाओं से कहा कि हम राजपूत परिवार में जन्में हैं इसलिये क्षात्रधर्म हमारा स्वधर्म है। अपने इस स्वधर्म का पालन करने पर ही हम क्षत्रिय बन सकेंगे। यदि हम ऐसा नहीं करते हैं तो हमारा रजोगुण तम के साथ मिलकर हमें पतन की ओर ले जाएगा। संघ हमारे रजोगुण को सत्व गुण की ओर उन्मुख करके सच्चा क्षत्रिय बनने के लिए प्रशिक्षित कर रहा है। शिविर में सांकड़ा, फलसूंड, राजमथाई, चौक, सनावड़ा, लूणा राजगढ़, भैंसडा आदि गांवों के युवाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। हरि सिंह सांकड़ा ने व्यवस्था में सहयोग किया। शिविर के दौरान दुगार्दास जी की जयंती भी मनाई गई जिसमें संभाग प्रमुख तारेंद्र सिंह झिनझिनयाली तथा पोकरण के पूर्व विधायक शैतान सिंह उपस्थित रहे। इसी प्रकार अजासर में संपन्न शिविर का संचालन गोविंद सिंह अवाय द्वारा किया गया। उन्होंने शिविरार्थियों से कहा कि आज के विषैले वातावरण में व्यक्ति अपने स्वयं के स्वार्थ को ही सर्वोच्च प्राथमिकता देता है, इसीलिए परिवार, समाज, राष्ट्र आदि विघटन को प्राप्त हो रहे हैं। इस विघटन को रोकने के लिए ऐसे युवाओं की आवश्यकता हैं जो अपने स्वयं के लिए जीवन ना जीकर समाज, राष्ट्र और मानवता की सेवा में अपने आप को नियोजित करें। संघ ऐसे ही युवा तैयार कर रहा है। शिविर में बारू, अवाय, दिधू, अजासर, आसकंद्रा आदि गांवों के 130 युवाओं ने प्रशिक्षण लिया। धर्मपाल सिंह आसकंद्रा ने व्यवस्था में सहयोग किया। दुर्गा दास जी की जयंती भी शिविर में मनाई गई। रामगढ़ प्रांत में भोजराज सिंह की ढाणी में भी शिविर का आयोजन इसी अवधि में हुआ। शिविर का संचालन करते हुए रतन सिंह बडोडागांव ने कहा कि संघ के बताए मार्ग पर चलकर ही हम अपने समाज को एक कर सकते हैं। सामाजिक एकता ही हमारे समाज में हो रहे पतन को रोकने में सक्षम है। बिना एकता के हमारी शक्तियां बिखरी हुई रहेंगी जिससे किसी भी लक्ष्य को प्राप्त नहीं किया जा सकता। शिविर में सोनू, पारेवर, भोजराज की ढाणी, पूनम नगर, जोगा, रामगढ़ आदि गांवों के युवा उपस्थित रहे। नागौर प्रांत के अलाय गांव स्थित जंभेश्वर विद्या मंदिर के प्रांगण में भी 19 से 22 अगस्त तक चार दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन हुआ जिस का संचालन नागौर संभाग प्रमुख शिंभू सिंह आसरवा द्वारा किया गया। उन्होंने शिविरार्थियों को संघ का उद्देश्य समझाते हुए कहा कि व्यक्ति का परम ध्येय ईश्वर की प्राप्ति करना होता है, किंतु मनुष्य और ईश्वर के बीच में एक कड़ी समाज की भी है। समाज की सेवा के माध्यम से ही ईश्वर और उसकी कृपा को प्राप्त किया जा सकता है इसीलिए संघ समाज की सेवा के माध्यम से अपना स्वधर्म पालन कर रहा है। शिविर में अलाय, छापड़ा, श्री बालाजी, हिंगोणीया, ऊँचाईडा, सिंगड, खेतास, टाँगली, चावंडिया, नादडा, बगसेउ, मांडेलिया, चरडास, सूरजनियास, भुन्डेल, गुगरियाली आदि गांवों से युवाओं ने भाग लिया। शिविर के दौरान राष्ट्रनायक दुगार्दास जी की जयंती भी मनाई गई। मध्य गुजरात संभाग के अहमदाबाद ग्राम्य प्रांत के काणेटी गांव स्थित प्राथमिक शाला में दो दिवसीय बाल शिविर का आयोजन 20-21 अगस्त को हुआ। संभाग प्रमुख दीवान सिंह काणेटी के संचालन में संपन्न शिविर में काणेटी, साणंद, वासणा, रतनपुरा, पिंपण, चेखला आदि गांवों के बालक सम्मिलित हुए। ग्रामवासियों ने मिलकर व्यवस्था का जिम्मा संभाला। काणेटी प्राथमिक शाला में एक तीन दिवसिय प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर 14 से 16 अगस्त तक भी आयोजित हुआ। योगेंद्र सिंह काणेटी ने शिविर का संचालन करते हुए शिविरार्थियों से आत्मचिंतन द्वारा अपने व्यक्तित्व में निखार लाने की बात कही। शिविर में काणेटी, साणंद, पलवाड़ा, खोड़ा, इयावा, मोडसर, पिपण, राशम, अहमदाबाद, धोलेरा, चेखला आदि गांवों से लगभग 90 युवाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविर के दौरान 15 अगस्त को शाला संकुल में तिरंगा फहराया गया व राष्ट्रनायक वीर दुगार्दास जी की जयंती भी मनाई गई जिसमें क्षेत्र के 250 समाजबंधु सम्मिलित हुए। गोहिलवाड़ संभाग के मोरचंद प्रांत में थलसर गांव में भी 21 से 23 अगस्त तक एक प्रशिक्षण शिविर आयोजित हुआ जिस का संचालन राजेंद्र सिंह मोरचंद ने धर्मेंद्र सिंह आंबली व छनुभा पच्छेगाम के निर्देशन में किया। उन्होंने शिविरार्थियों से कहा कि हमारा यह जीवन केवल हमारे लिए ही नहीं है बल्कि इस पर हमारे परिवार और समाज का भी अधिकार है। उनका जो हम पर ऋण है वह चुकाना हमारा कर्तव्य है। **(शेष पृष्ठ 7 पर)**

मूंगेरिया, बाड़मेर

हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

हमारी शाखा के प्रेरक

श्री मदनसिंह थुंबा

(शारीरिक शिक्षक) के रा.उ.मा.वि. पांचोटा से अपनी गौरवमयी राजकीय सेवा से सेवानिवृत्त होने पर हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं।

शुभेच्छु

श्री तल्लिनाथ शाखा पांचोटा एवं वीर दुगार्दास शाखा वलदरा, श्री क्षत्रिय युवक संघ मंडल आहोर (जालोर)

संपादकीय

पारिवारिक भाव और राजनेता

परिवार को पारिवारिक भाव बांधता है। वही भाव है जिसके बल पर व्यक्ति परिवार का अनुशासन भी मानता है एवं परिवार से संरक्षण भी पाता है। परिवार उसे अपना मानता है और वह परिवार को अपना मानता है। परिवार उसके ऊपर आने वाली विपत्तियों से उसे बचाता ही नहीं बल्कि उसकी स्वयं की प्रगति के लिए उसका नियमन भी करता है, उस पर नियंत्रण भी स्थापित करता है और वह यदि मार्ग पर नहीं है तो मार्ग पर भी लाता है। ऐसा हम सभी हमारे परिवारों में करते हैं और देखते हैं। यदि परिवार का कोई व्यक्ति गलती भी करता है तो सार्वजनिक रूप से उसका बचाव करते हैं वहीं घर में एकांत में उसको उसकी गलती का अहसास करवा कर उसे सुधारने को भी कहते हैं। यदि परिवार का कोई सदस्य परिवार की अपेक्षाओं पर खरा नहीं उतरता तो उसको सार्वजनिक रूप से प्रताड़ित नहीं करते, समाज में उसकी स्थिति को कमजोर नहीं करते बल्कि वहां तो उसका बचाव ही करते हैं पर परिवार में बैठकर उसकी गलती का अहसास करवाते हैं,आवश्यक होने पर खरी खोटी भी सुनाते हैं और कड़ाई से भी पेश आते हैं, यही पारिवारिक भाव है। जो अपना है वह परिवार के बाहर हमारे परिवार का प्रतिनिधि है इसलिए वहां उसका सम्मान पूरे परिवार का सम्मान है परंतु यदि वह कुछ गलत करता है तो परिवार के भीतर उसकी उस गलती का अहसास करवाना, उसकी उस गलती का नियमन करना भी परिवार का ही दायित्व है। समाज भी हमारा परिवार है, बड़ा परिवार है और जिस प्रकार परिवार के प्रति हमारा भाव होता है वैसा ही पारिवारिक भाव समाज के प्रति भी होना चाहिए। समाज के सामाजिक कार्यकर्ता, राजनैतिक कार्यकर्ता, अधिकारी, कर्मचारी, व्यवसायी आदि सभी समाज परिवार के सदस्य हैं। इस परिवार के सदस्यों का समाज के प्रति भी वही पारिवारिक भाव अपेक्षित है जो हमारे सामान्य परिवार के प्रति होता है। समाज का भी सदस्यों के प्रति वही भाव होना चाहिए जो परिवार का सदस्यों के प्रति होता है। समाज के सदस्यों के बीच भी वैसा ही भाव होना चाहिए जो परिवार के सदस्यों के बीच होता है। यह सब होने पर ही समाज परिवार बनता है और उसमें पारिवारिक भाव पैदा होता है। इसी पारिवारिक भाव का एक भाग इस आलेख का चिंतनीय विषय है।

ऊपर हमने पढ़ा कि परिवार के सदस्यों के बीच यह भाव होना चाहिए कि परिवार के बाहर वे अपने सदस्य का सम्मान बढायें और यदि वह गलत है तो परिवार के भीतर उसको उसकी गलती का अहसास करवाया जाए। क्या हम समाज में ऐसा कर पाते हैं? इस आलेख के शीर्षक के अगले शब्द राजनेता को हम लेते हैं। हम प्रायः हमारे समाज के राजनेताओं को बूरा भला कहते रहते हैं। यदि हम गहराई से निरीक्षण करें तो पायेंगे कि यदि किसी समाज के राजनेताओं को उन्हीं के समाज बंधुओं द्वारा दिए जाने वाले उलाहनों की बात जाए तो हमारे समाज के लोग प्रथम होंगे। इसे हम जागरुकता कह सकते हैं, हम कह सकते हैं कि हमने उनको सद्भावना के रूप में ही सही पर सहयोग तो किया है इसलिए उनसे प्रश्न पूछना, उनको उलाहना देना या वे किसी जगह पर सही तरीके से समाज की बात नहीं करते हैं तो उन्हें टोकना हमारी जागरुकता है। निश्चित रूप से जागरुकता है पर यह जागरुकता प्रकट कैसे होती है, यह महत्वपूर्ण है। हमने ऊपर देखा कि पारिवारिक भाव की यह मांग है कि हमारे परिवार का सदस्य कुछ गलत करता है तो परिवार के बाहर उसका बचाव किया जाए और परिवार के भीतर उसको उसकी गलती का अहसास करवाया जाए। क्या हम राजनेताओं के मामले में ऐसा कर पाते हैं? जो भी विरोध करने वाले हैं वे अपने आप से पूछें? हम इसका उल्टा करते हैं। सार्वजनिक रूप से उनको जलील करते हैं, उनकी कमियाँ गिनाते हैं, उनको हराने और मिटाने की बात करते हैं और व्यक्तिगत रूप से अकेले में उनके कृपा कटाक्ष को पाने को आतुर नजर आते हैं। मुझे एक तथाकथित सामाजिक संगठन के पदाधिकारी का वाकया याद आता है, वे महाशय नित्य प्रति हमारे समाज के एक राजनेता को सामाजिक मंचों, सोशल मीडिया आदि पर कोसते रहते हैं परंतु अपने किसी कार्यक्रम के लिए उनको ही बुलाने की सिफारिश करने का आग्रह करते देखे गये है। ऐसे एक नहीं अनेक वाकये हैं और उन महाशय जैसे समाज के एक नहीं बहुता सारे लोग हैं जो इस प्रकार का विपरीत व्यवहार करते हैं। इसका दोहरा नुकसान होता है। पहला तो सार्वजनिक रूप से हमारा राजनीतिक नेतृत्व कमजोर होता है, अन्य समाज के लोगों में यह धारणा बनती है कि इनका समाज ही इनके साथ नहीं है और दूसरा उन राजनेता की नजरों में हमारे विरोध का मूल्य शुन्य हो जाता है और साथ ही उसमें समाज से दुराव भी पैदा होता है कि ये ही मेरे कपड़े फाड़ने को आतुर हैं तो कैसा परिवार और कैसा पारिवारिक भाव?

इसका अर्थ यह नहीं है कि राजनेताओं के सौ गुनाह भी माफ हैं, वे भी इस समाज परिवार के प्रति उतने ही जिम्मेदार हैं जितना एक सामान्य राजपूत और उनको इस बात का अहसास करवाया ही जाना चाहिए और मजबूती से करवाया जाना चाहिए लेकिन उसका तरीका पारिवारिक भाव वाला होना चाहिए। लोगों के सामने किसी की आलोचना कर अपने आपको बड़ा बनाने का नकारात्मक भाव पारिवारिक भाव नहीं है बल्कि इसके विपरीत भाव है और विपरीत भाव से अभाव सृजित होता है, भाव नहीं। जिम्मेदार व्यक्ति अपने किसी बड़े आदमी की सार्वजनिक आलोचना कर अपने आपको बड़ा बनाने का नकारात्मक तरीका नहीं अपनाता बल्कि वह उस अपने को संसार के सामने बड़ा बनाने का प्रयास कर अपना दायित्व निभाता है और अकेले में उसको उसकी गलतियों का अहसास करवाता है। श्री क्षत्रिय युवक संघ के माननीय संरक्षक महोदय के राजनीतिज्ञों के साथ ऐसे वार्तालाप के अनेक उदाहरण इस चर्चा में स्मरण होते हैं जब उन्होंने राजनेताओं के साथ इस प्रकार का संतुलित व्यवहार कर उनको और समाज दोनों को मजबूत करने का प्रयास किया है। पार्टी को अपनी मां कहने वाले राजनेता जब सहायता मांगने आये और अकेले में बात करने का अवसर मिला तो स्पष्ट जबाब भी दिया गया कि जब पार्टी ही मां है तो हमारे पास क्या लेने आये हो? कमरे के भीतर बैठाकर अभिभावक जैसे छोटे बच्चे को डांट डपट और लाड प्यार से समझाता है वैसे समझाने के भी अनेक उदाहरण हैं लेकिन कमरे के बाहर उनको वही सम्मान दिया जिसके वे अधिकारी हैं। यह पारिवारिक भाव होता है और जिस दिन हम इसके अनुरूप हमारे राजनेताओं के साथ व्यवहार करने लगेंगे उस दिन राजनेताओं को भी परिवार की अहमियत पता चलने लगेगी, हमारी बात में भी वजन हो जाएगा, राजनेताओं का चिंतन भी सभी दिशा में प्रवाहित होगा और सार्वजनिक रूप से उनकी मानहानि करने के आत्मघाती कृत्यों से भी हम बच सकेंगे। लेकिन हम ऐसा कब कर पायेंगे जब हमारी स्वयं की नेता बनने की चाह को संयत कर पायेंगे, किसी की आलोचना कर अपने आपको बड़ा बनाने की चाह को नियंत्रित कर पायेंगे और सबसे बड़ी बात अपने व्यक्तिगत स्वार्थों को तिलांजलि देकर नेताजी की नाराजगी की परवाह किए बिना आंख में आंख डालकर व्यक्तिगत रूप से उनसे बात कर पायेंगे। लेकिन जिनको कुछ पाना है या जिनको कुछ छिनने का डर है वे तो दूर बैठकर आलोचना करते रहेंगे और सामने आने पर चरण चंपी करेंगे और जब तक ऐसा करेंगे तब तक समाज ना तो परिवार बनेगा और ना ही पारिवारिक भाव पनपेगा।

खरी-खरी

अफगानिस्तान के बहाने

अफगानिस्तान में तालिबानियों ने सत्ता पर कब्जा कर लिया। अमेरिका की सरपरस्ती में बनी सरकार और फौज ने बिना लड़े ही हार मान ली और भाग खड़े हुए। उसके बाद आत्म समर्पण कर चुके सैनिकों की बर्बर हत्या, हर खतरे को मोल लेकर भी देश छोड़ने को आतुर भीड़, महिलाओं और बच्चों पर अत्याचार आदि के अनेक वीभत्स एवं अमानवीय दृश्य समाचार माध्यमों के माध्यम से संसार तक पहुंच रहे हैं। हमारे देश में इसकी अलग अलग प्रतिक्रियाएं सामने आ रही हैं। देश के भीतर के कट्टरपंथी तत्व बेशर्मी पूर्वक तालिबानी कब्जे को अफगानिस्तान की आजादी कहकर पाकिस्तान के प्रधानमंत्री की भाषा बोल रहे हैं। देश का तथाकथित अल्पसंख्यकवादी तबका इन सब घटनाओं पर असाधारण रूप से मौन हो गया है। जिन्होंने संविधान में वर्णित पंथनिरपेक्षता को धर्मनिरपेक्षता का रूप देकर मुस्लिम मतों का ध्रुवीकरण करने के लिए अल्पसंख्यकवाद चलाया, उनकी बोलती बंद हो गई है। उन्हें ना तो असहिष्णुता दिखाई दे रही है, ना मानव अधिकार दिखाई दे रहे हैं, महिला अधिकारों की बात करने वाले प्रगतिवादी भी भारत में कहीं भी अफगानिस्तान की चर्चा करते नजर नहीं आते। इससे यह स्पष्ट हो गया है कि ऐसे सभी प्रगतिवादियों, पंथनिरपेक्षता के पैरोकारों, मानव अधिकार व महिला अधिकारों की बात करने वालों का वास्तविक एजेंडा अल्पसंख्यकवाद है जिसके तहत वे अपने या अपने आकाओं के लिए वोटों का ध्रुवीकरण करने के लिए इन सब मुखौटों का सहारा लेते हैं और इसके लिए वे भारत की भारतीयता को भी निशाना बनाने से परहेज नहीं करते।

दूसरी तरफ इस अल्पसंख्यकवाद की प्रतिक्रिया में पनपा बहुसंख्यकवाद अफगानिस्तान को लेकर असाधारण रूप से मुखर है। वे इसका भारत के अल्पसंख्यकों के विरुद्ध माहौल बनाने में इसका भरपूर उपयोग कर रहे हैं। तरह तरह की फोटो, वीडियो आदि को सोशल मीडिया में शेयर कर तरह तरह के संदेश वायरल किए जा रहे हैं और जनमानस को पहले वालों के विपरीत लामबद्ध करने में इसका भरपूर उपयोग कर रहे हैं। सरकार के भक्त की उपाधि पा चुके लोग सरकार की नाकामियों को छिपाने के लिए इस घटनाक्रम का पूर्ण उपयोग कर रहे हैं और आपको सोशल मीडिया में ऐसे अनेक संदेश तैरते दिखाई देंगे जिनमें महंगे पैट्रोल और डीजल के दर्द की भरपाई अफगानिस्तान से करने की परोक्ष सलाह दी जा रही है। देश के भीतर की समस्याओं के समस्त प्रबंधन की तुलना अफगानिस्तान से की जा रही है और उसके आधार पर इन सब की परवाह न करने की सलाह भी दी जा रही है। **(शेष पृष्ठ 7 पर)**

कोटा और बूंदी की कार्य विस्तार बैठकें

श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन की स्थापना 12 जनवरी 2019 को की गई। तब से लगातार राजस्थान के विभिन्न जिलों में जाकर फाउंडेशन की अवधारणा को समझा कर सहयोगी ढूंढने व कार्य को विस्तार देने का काम जारी है। कोरोना काल में भौतिक बैठकों में आये अवरोध के हटने के बाद यह विस्तार कार्य पुनः प्रारंभ हुआ और अगस्त माह के प्रारंभ में चुरु, दौसा व अजमेर जिले की बैठकें की गईं। इसके बाद 20 अगस्त मोहर्रम के अवकाश के दिन बुंदी व कोटा जिले की बैठक की गई। दोनों बैठकों में श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन की स्थापना के कारणों, उसके उद्धेश्य, उद्धेश्य में सहायक बिंदुओं व इस हेतु अब तक किए गये प्रयासों की जानकारी दी गई। स्थानीय बंधु इस काम में कैसे सहयोगी बन सकते हैं इस हेतु चर्चा की गई एवं स्थानीय सहयोगियों को चिह्नित किया गया। आर्थिक आधार पर मिले आरक्षण के बारे में विस्तार से बताया गया।

फाउंडेशन की श्री क्षत्रिय युवक संघ से संबद्धता की जानकारी दी गई एवं संघ की कार्यप्रणाली की भी जानकारी दी गई। श्री प्रताप फाउंडेशन की स्थापना की पृष्ठभूमि एवं क्रियाकलापों की जानकारी दी गई। बूंदी की बैठक के लिए अरिहंत सिंह चरड़ास ने सबसे संपर्क किया वहीं कोटा की बैठक में लोकेंद्र सिंह राजावत व भवानीसिंह दांतीवाड़ा सहयोगी रहे।

झुंझार रतनसिंह भाटी को श्रद्धांजलि

महाराजा मानसिंह के पक्ष में जालोर की रक्षार्थ दुश्मनों से लड़कर जालोर के सूरजपोल के बाहर झुंझार हुए रतनसिंह भाटी की स्मृति में 18 अगस्त को जालोर में स्मृति कार्यक्रम रखा गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए जालोर विधायक जोगेश्वर गर्ग ने कहा कि जालोर का यह दुर्भाग्य रहा कि रतनसिंह जी जैसे असंख्य योद्धाओं का इतिहास सहेजा नहीं गया। हमें इस दिशा में प्रयास करना चाहिए और जालोर के गांव गांव में फैली इन शौर्य गाथाओं को लिपिबद्ध कर संसार के समक्ष लाना चाहिए। आहोर विधायक छगनसिंह राजपुरोहित ने स्मारकों का संरक्षण करने की आवश्यकता बताते हुए हर संभव मदद का आश्वासन दिया। सिवाना विधायक हमीरसिंह भायल ने ऐतिहासिक तथ्यों की जानकारी प्रदान करते हुए बताया की क्षत्रिय समाज के साथ अन्य समाज के लोगों ने भी अपना बलिदान देते हुए राष्ट्रहित में सर्वोच्च अर्पित कर दिया। इसलिए हम सभी को मिलकर ऐसे स्थानों और स्मारको का संरक्षण करना चाहिए। भाजपा के नेता रविंद्रसिंह बालावत ने जालौर के इतिहास की जानकारी प्रदान करते हुए कहा कि हम हमारे उज्जवल इतिहास को ध्यान मे रखकर इससे प्रेरणा लेते हुए आगे बढ़े। पूर्व विधायक राम लाल मेघवाल ने भी संबोधित किया। कार्यक्रम आयोजक परिवार की ओर से सिवाना के पूर्व विधायक कानसिंह कोटडी ने सभी का आभार व्यक्त करते हुए मानवता के लिए बलिदान हुए पूर्वजों के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की।

पंकज कुमार सिंह बने बीएसएफडीजी

राजस्थान कैडर के वरिष्ठ आई पी एस अधिकारी पंकज कुमार सिंह को भारतीय सीमा सुरक्षा बल का महा निदेशक बनाया गया है। आपके पिता प्रकाश सिंह भी इसी पद पर रह चुके हैं, उन्होंने देश में पुलिस सुधारों के लिए उल्लेखनीय कार्य किया था।

कर्मचारी, अधिकारी एवं पत्रकारों का अभिनंदन

सीकर में जिला स्तरीय समारोह में स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर जिला प्रशासन द्वारा सम्मानित डा. भगवती चुंडावत, पत्रकार यादवेंद्र सिंह राठौड़, गजेंद्र सिंह व संदीप सिंह का समाज बंधुओं द्वारा 20 अगस्त को अभिनंदन किया गया। अभिनंदन कार्यक्रम को संबोधित करते हुए समाज सेवी बाबूसिंह बाजोर ने मानव सेवा के कारण मिले इस सम्मान से प्रेरणा लेने की बात कही। ईश्वर सिंह ने महिला सशक्तिकरण को समाज की बड़ी आवश्यकता बताया। कार्यक्रम का संचालन मगनसिंह ने किया। मूलसिंह बरसिंहपुरा ने सभी का स्वागत किया वहीं ओमपालसिंह ठिमोली ने आभार जताया।

श्री राजपूत विद्यासभा में स्वतंत्रता दिवस मनाया

श्री राजपूत विद्यासभा द्वारा स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर वीरों के प्रति श्रद्धांजलि का कार्यक्रम रखा गया। श्री हरेन्द्रसिंह राजपूत समाज भवन, गोता, अहमदाबाद में आयोजित इस कार्यक्रम में गुजरात के लोक कलाकारों द्वारा इस भूमि की रक्षार्थ किए गये बलिदानों का स्मरण करते हुए प्रस्तुति दी गई एवं वीरों को श्रद्धांजलि दी गई। इसी कार्यक्रम में भाजपा में उपप्रमुख बने महेन्द्रसिंह जी सरवैया और महामंत्री बने प्रदिपसिंह वाघेला को भी सम्मानित किया गया । संस्था के अध्यक्ष अश्विनीसिंह सरवैया व युवा शाखा के अध्यक्ष सुरेन्द्रसिंह जाडेजा व उनकी टीम ने कार्यक्रम के आयोजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

नीना सिंह होंगी सी आई एस एफ की अतिरिक्त महानिदेशक

राजस्थान पुलिस की पहली महिला महानिदेशक नीना सिंह अब केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल की अतिरिक्त महानिदेशक होंगी । उन्हें विगत दिनों ही प्रदेश की पहली महिला महानिदेशक का गौरव मिला था। इनके पति रोहित कुमार सिंह भी राजस्थान कैडर के वरिष्ठ आई ए एस हैं और वर्तमान में केन्द्र सरकार में प्रतिनियुक्त हैं।

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha, Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

अलख नयन
आई हॉस्पिटल
Super Specialized Eye Care Institute
विश्वस्तरीय सम्पूर्ण नेत्र चिकित्सा सेवाएं
मोतियाबिन्द | कॉर्निया | नेत्र प्रत्यारोपण
कालापानी | रेटिना | बच्चों के नेत्र रोग
डायबिटीक रेटिनोपैथी | ऑक्यूलोप्लास्टि
'अलख हिल्स', प्रताप नगर ऐक्सटेंशन, एयरपोर्ट रोड, उदयपुर
0294-2490970, 71, 72, 9772204624
e-mail : info@alakhnayanmandir.org, Website : www.alakhnayanmandir.org

शाखा अमृत

15 अगस्त को रविवारीय वर्चुअल शाखा में पूज्य तनसिंह जी की डायरी के अवतरण संख्या 166 पर चर्चा करते हुए माननीय महावीर सिंह जी ने बताया कि आज के युग में जब सारी दुनिया भौतिक उपलब्धियों की दौड़ में है, वहीं श्री क्षत्रिय युवक संघ द्वारा अपने पारिवारिक व सामाजिक उत्तरदायित्व को निभाते हुए स्वधर्म की बात करना, मानव और क्षत्रिय के रूप में हमारे कर्तव्यों की बात करना सभी को आश्चर्य लगता है। आज के भौतिकवादी युग में कौन ऐसा करता है? हिरण्यकश्यप के काल में उसके ही पुत्र प्रह्लाद ने संघर्ष करके, ध्येयनिष्ठ होकर अपने लक्ष्य को प्राप्त कर धर्म की स्थापना की, उसी प्रकार श्री क्षत्रिय युवक संघ भी दुनिया के प्रवाह के विपरीत संघर्ष करते हुए धर्म की, भगवान की, मानवता की सेवा की बात करता है, क्षात्र धर्म व क्षत्रियत्व की बात करता है तो लोगों को आश्चर्य होता है। हमारी साधना एक आश्चर्य के साथ एक स्वाभाविक साधारणता भी है। उज्ज्वल ख्याति वाला समाज जो संसार को राह बताता था आज पतित हो गया है। ऐसे में संघ स्वाभाविक व वास्तविक जीवन क्या है, ऐसा बता कर वैसा जीवन जीने के लिए हमें उपयुक्त मार्ग पर चलाने का प्रयास करता है। यह प्रयास ठीक वैसा ही है जैसे भग्न खण्डहरों में जीवन उगाने का प्रयास करना। आगे स्वयंसेवकों के प्रश्नों का उत्तर देते हुए उन्होंने बताया कि क्षात्र धर्म का जो मार्ग हम भूल गए हैं, उस मार्ग पर समाज को बढ़ने की शिक्षा संघ दे रहा है। जो इस प्रकार का कार्य करते हैं उनकी सहायता स्वयं भागवत शक्तियां करती हैं। 22 अगस्त को डायरी के अवतरण संख्या 395 पर चर्चा करते हुए महावीर सिंह जी ने कहा कि समाज में भिन्न-भिन्न प्रकृति एवं स्वभाव के लोग होते हैं। कोई कर्मठ है, कोई ज्ञानी है, कोई वाचाल है, कोई शांत स्वभाव का है। लेकिन फिर भी यदि हम एक दिखते हैं तो यह केवल परमेश्वर की कृपा एवं चाह से ही सम्भव हो रहा है, यह समाज परमेश्वर का ही कुटुम्ब है। हमारी भीतरी आस्था, संघ के प्रति आस्था, हमारी हमारे उत्तरदायित्व के प्रति आस्था मजबूत होगी तो एकता जरूर नजर आएगी। संघ व समाज के फलने-फूलने, उत्थान का दायित्व परमेश्वर पर है, अतः उनकी कृपा से ही एकता हो रही है। हम परमेश्वर पर विश्वास रखते हुए साधनारत रहें, ईश्वर के सिपाही बन जाएं, संघ व संघ के दायित्वाधीन व्यक्ति के निर्देशों का यथाशक्य पालन करें तो एक दिन सम्पूर्ण एकता भी आ जाएगी। आगे स्वयंसेवकों की जिज्ञासाओं के समाधान में उन्होंने बताया कि यदि हम श्री क्षत्रिय युवक संघ के प्रति सच्चे बन जाएं तो हम राष्ट्र के प्रति, समाज के प्रति भी सच्चे बनेंगे। संघ हमारे में क्षत्रिय का स्वभाव लाता है और क्षत्रिय समाज एवं राष्ट्र के लिए जीता है। संघ व समाज के प्रति हमारी आस्था है, तो हम निरंतर कर्म करेंगे एवं सक्रिय रहेंगे। जो संघ चाहता है उसके अनुसार हम कर्म करेंगे तो हमारी आस्था मजबूत होगी। हर व्यक्ति में जन्मजात गुण व अवगुण होते हैं, उन्हें पहचान करके आगे बढ़ना साधना से ही संभव है। अन्यथा विशिष्टता भी बाधक बन सकती है।

12 अगस्त को 'आँसू इक उमड़ा' सहगीत के अर्थबोध में माननीय अजीत सिंह जी ने बताया कि आंसू केवल दर्द से ही आये, ऐसा आवश्यक नहीं है। कभी कभी अत्यंत प्रसन्नता में भी आंसू निकल आते हैं। अश्रु की प्रत्येक बून्द की अपनी कहानी होती है। यह सहगीत भी एक ऐसे अश्रु की कहानी है जिसका उद्गम समाज के प्रति पीड़ा से हुआ है। हृदय की संवेदना जब उमड़ती है तब यह दुविधा पैदा होती है कि उसे प्रकट किया जाए अथवा अंदर ही पी लिया जाए। यदि प्रकट किया जाए किसके सामने? कौन उसकी कीमत को समझ सकता है और कौन उसका उपहास करता है, इसके अनुसार ही व्यथा को प्रकट किया जाता है। व्यथा यदि वास्तविक और गहरी है तो वह रुक नहीं सकती, प्रकट हुए बिना नहीं रह सकती। पूज्य तन सिंह जी की पीड़ा भी ऐसी ही थी जो श्री क्षत्रिय युवक संघ के रूप में प्रकट हुई। जिस प्रकार दीपक के जलने पर उसके प्रकाश की ओर आकर्षित होकर पतंगे आते हैं और अपने आप को जला देते हैं उसी प्रकार संघ से प्रभावित होकर हम सब संघ में आए हैं। इस व्यथा से विवश होकर जो संघ का कार्य करते हैं, उनके लिए अनायास ही ज्ञान के द्वार खुल जाते हैं, अज्ञान का पर्दा हट जाता है और परमेश्वर से मिलन का मार्ग मिल जाता है। 19 अगस्त को पूज्य तनसिंह जी रचित सहगीत 'भूल भी थी कैसी' पर चर्चा करते हुए माननीय अजीतसिंह जी धोलेरा ने बताया कि ऐसा कोई व्यक्ति नहीं होता जिसने कोई भूल नहीं की हो और भूल सदैव बेहोशी में होती है। मनुष्य स्वभाव से हर समय हर जगह होश में नहीं रह सकता। जिस प्रकार स्त्री कष्ट झेलकर भी मातृत्व धारण करती है एवं सृष्टि के संचालन में अपनी सार्थकता सिद्ध करते हुए मृत्यु से साक्षात्कार करके भी एक शिशु को जन्म देती है उसी प्रकार पूज्य तनसिंह जी ने समाज की स्थिति देखकर निजी सांसारिक जीवन का त्याग करके संघ की स्थापना की। व्यक्ति मिट कर संघ बन गया। यह भूल अन्दर की वेदना से प्रेरित होकर की गई भूल थी। वही उनका स्वधर्म था। हर क्षेत्र में अपनी सीमा बाँधने वाले क्षत्रिय समाज की आज जो दुर्दशा एवं पतन हो गया है, यह स्थिति उनके लिए असह्य पीड़ा बन गई। पूज्य श्री ने उस पीड़ा को मिटाने के लिए अपने धर्म का पालन करते हुए संघ की स्थापना की और हमें नया जीवन, नई राह दी। समाज में परिवर्तन के लिए अपना जीवन समर्पित करने की स्थिति को पूज्य श्री ने इस गीत में सुख की समाधि बताया है। यह जन्म-जन्मों की साधना है। समाज पुनः अपने भूले हुए स्वधर्म के पथ पर चलना प्रारम्भ करे, यही पूज्य तनसिंह जी की एकमात्र आशा है। हम भी संघ कार्य में लगकर पूज्य श्री की पीड़ा को अपनी पीड़ा बनाने का प्रयास करें तो समाज में परिवर्तन अवश्य आएगा। 26 अगस्त को पूज्य श्री रचित सहगीत 'क्या आंख के आंसू कभी भी बोलते हैं' पर चर्चा करते हुए उन्होंने बताया कि पूज्य तनसिंह जी ने आंसुओं को बहुत महत्व दिया है उनके सहगीतों में, साहित्य में अनेक स्थानों पर आंसू की चर्चा हुई है। आंसू की अपनी भाषा होती है जो व्यथा, संवेदना, प्रेम, विरह, पश्चाताप जैसे भावों को व्यक्त करती है। इस भाषा को संवेदनशील व्यक्ति ही समझ सकता है। जो इस भाषा को समझ लेते हैं वे ऐसे साथी बन जाते हैं जो किसी भी परिस्थिति में एक दूसरे का साथ नहीं छोड़ते। तनसिंह जी के लिखे गीत भी ऐसे ही दर्द की अभिव्यक्ति है जिन्हें बुद्धि से नहीं केवल हृदय से ही समझा जा सकता है। बुद्धि से, तर्क से जो संघ को तोलता है उस पर यह व्यथा असर नहीं कर पाती, क्योंकि संवेदना तर्क से परे होती है। भावधारा सूख जाने पर व्यक्ति सांसारिक व्यामोह में फंस जाता है। संघ हमें इस व्यामोह से निकालकर परम लक्ष्य की ओर उन्मुख कर रहा है।

रक्षासूत्र बांधकर मनाया रक्षाबंधन

रक्षाबंधन का पर्व संघ की शाखाओं में 22 अगस्त को हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। जयपुर स्थित केंद्रीय कार्यालय 'संघशक्ति' में वरिष्ठ स्वयंसेवक माननीय महावीर सिंह सरवड़ी के सान्निध्य में उपस्थित स्वयंसेवकों ने एक दूसरे को रक्षासूत्र बांधकर रक्षाबंधन का पर्व मनाया। सूरत में सारोली स्थित वीर अभिमन्यु पार्क में प्रांतप्रमुख खेत सिंह चांदेसरा की उपस्थिति में उल्लासपूर्वक रक्षाबंधन मनाया गया। स्वयंसेवकों द्वारा एक दूसरे को रक्षासूत्र बांधकर त्योंहार की शुभकामनाएं दी गई। गोहिलवाड़ संभाग में दरबार बोर्डिंग (भावनगर), नारी, अवाणियां, धोलेरा व धंधुका में इस अवसर पर यज्ञ के साथ जनेऊ का कार्यक्रम संपन्न हुआ। काणेटी स्थित दरबार वाड़ी में भी रक्षाबंधन कार्यक्रम यज्ञ के साथ संपन्न हुआ। महाराष्ट्र संभाग के दक्षिणी मुम्बई प्रान्त की तनेराज शाखा में भी भाईचारे का प्रतीक पवित्र रक्षाबंधन का पर्व मनाया गया। स्वयंसेवकों ने आपस मे एक दूसरे राखी बांधी एवं इसी बन्धन को साक्षी मानकर संघकार्य में निरंतर सहयोगी भाव से लगे रहने का संकल्प लिया। बालोतरा में आवासन मंडल में श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन के तत्वावधान में रक्षाबंधन मनाया गया। पदम सिंह भाऊड़ा व आससकरण सिंह पोछीना ने रक्षाबंधन पर्व की महत्ता बताई। चौहटन प्रान्त में गौहड़ का तला व वांकल माता मंदिर में शाखा स्तर पर रक्षाबंधन मनाया गया। बीकानेर के भलुरी में भी रक्षाबंधन पर्व मनाया गया। जोधपुर संभाग के सात स्थानों पर शाखा स्तर पर रक्षाबंधन मनाया गया। 20 अगस्त को तणैराज शाखा डिगाड़ी में, 21 अगस्त को सरदार छात्रावास शाखा में, 22 अगस्त को हनुवंत छात्रावास शाखा, जय भवानी नगर शाखा, माँ नागाणाराय शाखा बामणू, 23 अगस्त को नारायण सांयकालीन शाखा तनायन व 24 अगस्त को ओमनगर शाखा में स्वयंसेवकों ने एक दूसरे को रक्षासूत्र बांधकर त्योंहार मनाया। मुंगेरिया, भोजराज की ढाणी तथा गागुंदरा शिविर के दौरान भी रक्षाबंधन का पर्व मनाया गया।

संघ शक्ति, जयपुर

सूरत

काणेटी

(पृष्ठ दो का शेष)

नौ दिवसीय... इसी प्रकार नागौर संभाग में लाडनूं सुजानगढ़ प्रांत के परावा में श्री साधना संगम संस्थान के तत्वावधान में जयन्ती कार्यक्रम हुआ। 21 अगस्त को जोधपुर शहर में राजेंद्र नगर में, महावीर नगर व बासनी में, शेरगढ़ प्रांत में लोड़ता, खियासरिया, परेऊ व भालू में, फलोदी-ओसियां प्रान्त में बापिणी, तापू, जाखण, तिंवरी, देणोक व पंडित जी की ढाणी में, बाड़मेर संभाग में चौहटन स्थित भवानी हॉस्टल में, बालोतरा संभाग के समदड़ी में, वीर दुगार्दास राजपूत छात्रावास बालोतरा में, बायतु प्रान्त के परेउ, सिमरखिया, सिसोदिया पाना गिड़ा व लापून्दड़ा गांवों में, सिणधरी स्थित भोमिया राजपूत छात्रावास में, नागौर में जायल स्थित राजपूत सभा भवन व नावां में, जालोर संभाग के सांचौर प्रांत के सिवाड़ा में, मालवा प्रांत में मंदसौर जिले में सीतामऊ में, जैसलमेर के अजासर शिविर में, जैसलमेर स्थित श्री जवाहिर राजपूत छात्रावास में, मूलाना में, मध्य गुजरात संभाग के गांधीनगर प्रांत में लेखावाडा में, श्री दसक्रोइ राजपूत समाज युवा संगठन चेरिटेबल ट्रस्ट के सहयोग से अहमदाबाद शहर में तथा पाटण प्रांत के खिजड़ियारी में भी जयंती कार्यक्रम का आयोजन हुआ। इसके अतिरिक्त चित्तौड़गढ़ स्थित श्री क्षत्रिय सेवा संस्थान भवन सेथी में, सूरत प्रांत के सारोली मंडल के अंतर्गत वीर अभिमन्यु पार्क में, बीकानेर के नोखा कोलायत प्रांत में भलूरी (बज्जू) में तथा हदा में 22 अगस्त को राष्ट्रनायक दुगार्दास जयंती के निमित्त कार्यक्रम रखे गए। इन सभी कार्यक्रमों में स्थानीय प्रांतप्रमुख अपने प्रांतीय व संभागीय सहयोग सहित सहयोगी बने। संभाग प्रमुखों सहित केन्द्रीय कार्यकारी व केन्द्रीय विभाग प्रमुखों ने भी आवश्यकता अनुसार अपनी भागीदारी निभाई।

जयपुर

खींवसर (नागौर)

उज्जैन

(पृष्ठ तीन का शेष)

दस दिन में... इस कर्तव्य पालन की शिक्षा प्राप्त करने के लिए ही हम संगठित हो शिविर में आए हैं। शिविर में मोरचंद, खडसलिया, थलसर, भवानीपरा, भावनगर, वल्लभीपुर आदि क्षेत्रों से युवा सम्मिलित हुए। उत्तर गुजरात संभाग के बनासकांठा प्रान्त के गागुंदरा गांव में पातालेश्वर महादेव मंदिर के प्रांगण में भी इसी अवधि में तीन दिवसीय शिविर आयोजित हुआ। प्रांत प्रमुख अजीत सिंह कुणघेर ने शिविर का संचालन करते हुए शिविरार्थियों से कहा कि संघ हमें सभी दृष्टि से शक्तिशाली बना रहा है क्योंकि शक्तिशाली नागरिकों से ही एक शक्तिशाली समाज और राष्ट्र का निर्माण होता है। शिविर में गागुंदरा, आरखी, पांसवाल, पांथावाडा, धनियावाडा, कोटडा, भीलाचल, डांगीया मडाणा, नारोली, वलादर, कुणघेर, लिबोणी, जेलाणा, मोटी महुडी, काणोठी, चारडा, ओढवा आदि गांवो के युवा सम्मिलित हुए। अनोपसिंह, ओपीसिंह, सुरपालसिंह सहित सभी ग्रामवासियों ने व्यवस्था में सहयोग किया। शिविर में रक्षाबंधन व दुगार्दास जयन्ती भी मनाए गए।

अजासुर

सांकड़ा

गागूंदरा

(पृष्ठ चार का शेष)

अफगानिस्तान... इस प्रकार सभी के अपने अपने एजेंडे हैं और हर कोई इस घटना को अपने एजेंडे में फिट कर अपनी बात को पुष्ट करने का प्रयास कर रहा है। लेकिन अफगानी सरकार के पलायन ने हमारे पूर्वजों के शौर्य पर प्रश्न उठाने वालों को यह सोचने को अवश्य मजबूर किया है कि किस प्रकार उन्होंने अपने जीवन को दांव पर लगाकर सदियों तक ऐसी ही आंधी से संघर्ष किया और इस भारत की भारतीयता को जिंदा रखा। पीढी दर पीढी इस आग में अपने आप को स्वाहा करते रहे लेकिन अपने जीवित रहते अपनी जनता तक इस आग की आंच को नहीं पहुंचने दिया। दीवार बनकर इस आंधी के सामने खड़े रहे और हर दीवार के ढ़हने पर नई दीवार बनती रही पर पलायन नहीं किया जिसका परिणाम है कि भारत की वह भारतीयता जो अफगानिस्तान से सिमट गई, मध्य एशिया से सिमट गई, पूर्वी एशिया से भी सिमट गई पर भारत में शेष रही। हमारे समाज के अति उत्साही लोग भी इन सब घटनाओं के आधार पर हमारे पूर्वजों के त्याग और बलिदान के बल पर अपने आप को श्रेष्ठ सिद्ध करने का प्रयास कर रहे हैं लेकिन हमारे लिए विचारणीय विषय यह है कि क्या हमारी चिंतन धारा इस ओर भी मुड़ रही है कि आखिर हम ऐसे श्रेष्ठ क्यों नहीं रहे? क्या पूर्वजों की वह श्रेष्ठता हमें श्रेष्ठ बनने की प्रेरणा भी दे रही है या केवल गर्व करने तक ही हम सीमित हैं? हमारे साथ साथ यह घटनाक्रम उन लोगों के सामने भी प्रश्न खड़ा करती है जो इस बहाने तालिबानी संस्कृति और सनातन संस्कृति की तुलना कर रहे हैं। वह प्रश्न यह है कि आखिर क्या कारण है कि हमारे यहाँ कभी तालिबान पैदा नहीं हुआ? क्या कारण है कि हमारे यहाँ कभी इस प्रकार के जंगली कानून नहीं बने और आत्मसमर्पण कर चुके लोगों को मारकर उनकी मृत देहों के साथ असम्मानजनक व्यवहार नहीं किया? क्या इस प्रकार की तुलना करने वाले लोग उन कारणों को खोजने का प्रयास करते हैं जिनके कारण यह भारतीयता बची रही? यदि वे खोजते तो अवश्य पाते कि इसकी जड़ों में वह सहिष्णुता है जो संपूर्ण सृष्टि को उस परमेश्वर की संतान समझती है और दोषी को भी दंड इसलिए देती है कि उसमें उसका कल्याण निहित है। अनेक लोग यह भी कहते हैं कि अफगानिस्तान से हमारी संस्कृति सिमट गई इसलिए आज वहां ये हालात हैं। उनका कहना सही है, ऐसा ही हुआ है लेकिन ऐसा होने का कारण क्या रहा, क्या इस पर वे चिंतन करते हैं? वे कहते हैं कि तालिबानियों की प्रेरक संस्कृति वहां आ गई इसलिए ऐसा हुआ लेकिन क्या वे इस बात पर भी चिंतन करते हैं कि वहाँ वह संस्कृति क्यों पनपी? क्यों भारत की भारतीयता अफगानिस्तान से सिमटती सिमटती वर्तमान भारत भूमि तक सीमित हो गई? क्या इसके विस्तार का कारण कोई पाशविक बल था और सिमटने का कारण भी क्या केवल आक्रांताओं का पाशविक बल ही है? यदि पाशविक बल ही होता तो फिर भारत क्यों बचा रह पाया? कारण पाशविक बल नहीं बल्कि हमारा अपना संकुचन था। हम जिसे धर्म कहते हैं, उसका संकुचन है। जब कोई धर्म संकुचित होता है तब वह सिमट जाता है। संकुचन और सिमटना दोनों में सापेक्ष संबंध है। एक दूसरे का परिणाम है। हमारे धर्म के ठेकेदारों ने धर्म को जितना संकुचित किया उसका क्रियात्मक स्वरूप संस्कृति भी उतनी ही संकुचित होती गई और परिणाम स्वरूप हम सिमटते गए। इसलिए आज अफगानिस्तान का उदाहरण देकर हमें फिर से संकुचित होने की शिक्षा देने वालों से अवश्य पूछा जाना चाहिए कि वे क्या इस भारत की सांस्कृतिक और भौगोलिक सीमाओं को फिर से संकुचित करना चाहते हैं। यह संकुचन अब तक इसलिए नहीं हुआ क्योंकि हमारे पूर्वजों ने परिणाम की चिंता किए बिना उदार होकर अपने दायित्व का पालन किया। आज भारतीय चिंतन की आत्मा 'निष्काम कर्मयोग' को तिलांजलि देने वाले लोगों के लिए सफलता ही सब कुछ हो गई है और इसीलिए वे हमारे पूर्वजों के निष्काम कर्तव्य निर्वहन को रणनीतिक भूल कहकर हार का इतिहास भी बताते हैं और बेशर्मी पूर्वक स्वयं को भारतीयता के प्रतीक भी बताते हैं और ऐसे ही लोग कभी अल्पसंख्यकवाद के नाम पर तो कभी बहुसंख्यकवाद के नाम पर, कभी वामपंथ के नाम पर तो कभी दक्षिणपंथ के नाम पर हमारे महान पूर्वजों पर प्रश्न भी उठाते हैं। उनका लक्ष्य अपना स्वयं का एजेंडा होता है। उस एजेंडे के तहत कभी हमारी आलोचना तो कभी हमारी बड़ाई करते हैं और हम कभी विरोधी के रूप में तो कभी समर्थक के रूप में इनके एजेंडे के मोहरे बनते रहते हैं। आजकल रह एजेंडा अफगानिस्तान के बहाने चल रहा है और हम भी किसी न किसी रूप में इसके मोहरे बने हुए हैं। हमारा पुरुषार्थ इस स्थिति को बदलने का होना चाहिए, क्या हम ऐसा कर पा रहे हैं?

उत्तरप्रदेश प्रांत में संपर्क यात्रा

संघ के उत्तर प्रदेश प्रांत में संघ कार्य में विस्तार हेतु प्रांत प्रमुख जितेंद्र सिंह सिसरवादा ने नेतृत्व में 4 दिवसीय संपर्क यात्रा का आयोजन किया गया। जयपुर से रवाना होकर 18 अगस्त को कानपुर पहुंचे। वहां कानपुर देहात के धरमंगतपुर में समाज बंधुओं व स्वयं सेवकों से संपर्क किया व संघकार्य बाबत चर्चा की। इसी दिन कानपुर शहर और घाटमपुर में स्थानीय क्षत्रिय बंधुओ से संपर्क किया। 19 अगस्त को ग्योडी में स्वयंसेवकों व समाज बंधुओं से संपर्क किया। 20 अगस्त को बांदा में संपर्क कर संघ कार्य बाबत चर्चाएं की। 21 अगस्त को महोबा में एक दिवसीय भ्रमण कार्यक्रम रखा गया। इस भ्रमण यात्रा में ही राष्ट्रनायक दुगार्दास राठौड़ की जयंती मनाई गई।

हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

हमारे प्रिय सहयोगी

श्री कमल सिंह काबावत (आकोली)

के जिला शिक्षा अधिकारी, (मुख्यालय माध्यमिक शिक्षा)

जालोर के रूप में नियुक्त होने पर

हार्दिक बधाई एवं उज्वल भविष्य की शुभकामनाएं

शुभेच्छुः

बाल सिंह काबावत, बूगांव
(मैनेजर एसबीआई भीनमाल)

शैतान सिंह काबावत,
रानीवाड़ा काबा, (महात्मा गांधी विद्यालय, जालोर)

भूपेन्द्र सिंह तंवर, दनचोली
(अध्यापक, राउप्रावि मोक)

डूंगर सिंह काबावत, मांडोली
(अध्यापक, राउमावि रामसीन)

दलपत सिंह देवड़ा, रोड़ा
(शा.शि. राउमावि कलापूरा)

राजेन्द्रसिंह काबावत, मांडोली
(अध्यापक राउप्रावि झाक)

जगदीश सिंह राठौड़,
नारणावास (अध्यापक, राउप्रावि आथमणावास, बागरा)

जयपालसिंह चौहान, आडवाड़ा
(शा.शि. राउप्रावि नागणी)

कमलसिंह काबावत, आकोली
(व.अ. राउमावि बिबलसर)

मदन सिंह राठौड़, थुंबा
(पूर्व शा.शि. राउमावि पांचोटा)

छोटूसिंह कारोला,
(अध्यापक, राउप्रावि भूरा की ढाणी, कारोला)

राजेन्द्रसिंह काबावत, आकोली
(व.अ. राउमावि शहरी, जालोर)

गणपतसिंह मंडलावत,
भंवरानी,
(शा.शि. राउप्रावि पांणवा)

जितेन्द्र सिंह सेवाड़ा
(व.अ. गुपड़ा,उदयपुर)

रूपसिंह राठौड़, नारणावास
(शा.शि. राउमावि नया नाराणावास)

ईश्वर सिंह देसू
(शा.शि. राउमावि देसू)

ईश्वर सिंह चौरा
(व.अ. राउमावि पालड़ी सोलंकियान)

ईश्वर सिंह सांगाणा
(सहायक परियोजना समन्वयक, जालोर)

अर्जुन सिंह देलदरी
(शा.शि. रामावि सरदारगढ़ खेड़ा)

अमरसिंह चांदणा
(अध्यापक, राउप्रावि, नागणी)

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाषः 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org